Lecture No. – 34/31-10-2020 

System PSY.

Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept. Of Psychology.
D.B. college Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study Material
B.A. Part-II (H)
Paper-IV
Date – 31-10-20
DO – Next class

## Humanistic Psychology

## Contribution of Rogers

(3) प्राणी तथा आत्मन् से सम्बन्ध (Relationship between organism and self):– अब प्रश्न यह उठता है की आत्मन् (Self) तथा प्राणी (organism) के बीच क्या सम्बन्ध (Relationship) होता है? जैसा की ऊपर कहा जा चुका है, व्यक्ति के आत्मन (Self) की उत्पत्ति प्राणी की अनुभूतियों (experiences) से होती है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति में वैसी अनुभूतियाँ जिससे आत्मन् (Self) का निर्माण होता है, प्राणी की अनुभूतियों के अनुकूल होती है। अगर इन दोनों तरह की अनुभूतियों में ताल मेल या संगठन (congruence) नहीं होती है, तो दुश्चिंता (anxiety) उत्पन्न होता है तथा व्यक्ति का व्यवहार रक्षात्मक (defensive) हो जाता है। दो प्रमुख रक्षात्मक व्यवहार है:– विकृति (Distortions) तथा नकार (denial)। विकृति (distortion) ~~नकार~~ से अधिक सामान्य है। अगर व्यक्ति में चिन्ता की मात्रा अधिक होती है में व्यक्ति अपनी ~~अनुभ~~ अनुभूतियों की व्याख्या गलत करता है ताकी यह आत्म संप्रत्यय के विभिन्न पहलुओं के साथ ठीक बैठ सके। नकार (denial) के व्यवहार में प्राणी अनुभूति~~यों~~ से अवगत

P.T.O.

Scanned with CamScanner

नहीं होना चाहता है। इन दोनों में विच्छुति (dissociation) नकार से अधिक सामान्य है। अगर व्यक्ति में चिंता की मात्रा अधिक होती है, तो ऐसी स्थिति में इन रक्षात्मक युक्तियाँ (defense) अधिक कारगर नहीं करती है और उसका व्यक्तित्व विघटित (disorganized) हो जाता है। इस तरह के विसंगति की स्थिति में व्यक्ति का मनश्चिकित्सा (psychotherapy) दी जाती है।

रोजर्स ने यह भी सुझाव दिया है कि आत्म-संप्रत्यय (self-concept) तथा आदर्शवादी आत्मन (ideal self) का संक्रियात्मक रूप से (operationally) क्यू-सार्ट (Q-sort) तथा विषय विश्लेषण (content analysis) द्वारा मापन किया जा सकता है।

Next class